Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part - II (Hons)
Paper - IV
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(Western Philosophy)

GRB
BOOKS

1 Kant: "Categories"
कान्ट: (संप्रत्यय)

Notes

बुद्धि की परीक्षा के दो भाग हैं: निर्णय-शक्ति की परीक्षा और प्रज्ञा की परीक्षा। एक में इसने बतलाया है कि किस प्रकार प्रत्यक्ष बोधों से निर्णय बनते हैं और दूसरे में कैसे वे निर्णय सामान्य प्रत्ययों के अन्तर्गत लाये जाते हैं। कान्ट ने पहले को बोधों की परीक्षा (Transcendental Analytic) और दूसरे को प्रज्ञान्याय की परीक्षा (Transcendental Dialectic) कहा है।

बोधों की परीक्षा (Transcendental Analytic) इस खंड में कान्ट ने प्रत्यक्ष बोधों को जिन सिद्धान्तों के द्वारा सम्बद्ध किया जाता है उनकी व्याख्या की है। उन सिद्धान्तों को इसने संप्रत्यय (Concept) कहा है। सर्वप्रथम वह इन संप्रत्ययों की खोज तथा उनका प्रमाण देता है। इसे उसने संप्रत्ययों के विश्लेषण (Analytic of Conceptions) खंड में किया है। इसके भी दो अंश हैं— एक में इन संप्रत्ययों की स्थापना होती है, इसे इसने संप्रत्ययों की तत्त्वमीमांसीय व्याख्या (Metaphysical deduction of Categories) कहा है और दूसरे में यह सिद्ध किया जाता है कि बिना उन संप्रत्ययों के वैज्ञानिक ज्ञान संभव नहीं है। इसे इसने संप्रत्ययों की अनुभवातीत व्याख्या (Transcendental

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes GRB BOOKS

deduction of categories)

1. मूल संप्रत्ययों की तत्व शास्त्रीय व्याख्या (Metaphysical deduction of categories) :— जिस प्रकार संवेदन - शक्ति बाह्य संवेदनों को देश - काल के साँचों में ग्रहण करती है और प्रत्यक्ष बोध बनाती है इसी प्रकार बुद्धि इन प्रत्यक्ष - बोधों को अपने संप्रत्ययों के द्वारा सम्बद्ध करती है। ये संप्रत्यय प्रत्यक्ष बोधों को समायोजित करने के आकार है। इसलिए जिस प्रकार देश - काल प्रागनुभविक है उसी प्रकार ये संप्रत्यय भी प्रागनुभाविक है। ये संप्रत्यय देश - काल की भाँति अनुभव के विषय नहीं अनुभव करने के तरीके हैं। संप्रत्ययों के द्वारा ही निर्णयों की रचना होती है। इन्हें अरस्तु के समय से ही संप्रत्यय से ही संप्रत्यय (categories) कहा जाता है।

चूंकि संप्रत्ययों के द्वारा ही निर्णयों की रचना होती है, इसलिए इनकी संख्या उतनी ही है जितनी निर्णयों की। निर्णयों की संख्या बारह है, अतः संप्रत्यय भी बारह है। निर्णयों के आधार चार है : परिमाण, गुण, सम्बन्ध तथा विधि। प्रत्येक के तीन निर्णय होते हैं। अतः कुल बारह। इन बारह निर्णयों से कान्ट ने बारह संप्रत्यय निकाले हैं।

निर्णयों या वाक्यों के भेद —

सुगम पास-बुक AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

निर्णय - भेद के आधार, निर्णय-

GRB BOOKS

Notes

भेद, उदाहरण संप्रत्यय निकाले हैं।
निर्णयों या वाक्यों के भेद —
निर्णय - भेद के आधार, निर्णय - भेद, उदाहरण, संप्रत्यय।

परिमाण के आधार पर —
1. पूर्णव्यापी - सब गधे में गाते हैं। (एकतत्व)
2. अंशव्यापी - कुछ मनुष्य ईमानदार हैं। (अनेकतत्व)
3. एकात्मक - राम मूर्ख है। (सम्पूर्णतत्व)

गुण के आधार पर —
1. भावात्मक — मनुष्य में ज्ञान है (सत्ता)
2. अभावात्मक — मनुष्य पक्षी नहीं है (अभाव)
3. अपरिमितात्मक - आत्मा अमर है (सीमित भाव)

सम्बन्ध के आधार पर —
1. निरपेक्ष — अग्नि में ताप है। (द्रव्य - गुणभाव)
2. द्विवाश्रित — यदि वर्षा होगी, तो फसल होगी (कार्य-कारण भाव)
3. वैकल्पिक - फूल या तो लाल है, या पीला। (अन्योन्याभाव)

विधि के आधार पर —
1. सन्देहात्मक - प्राचीन युग में भी शायद वैज्ञानिक थे। (सम्भावना - असम्भावना)
2. विधानात्मक - राम अच्छा है। (वास्तविकता, अवास्तविकता)
3. अनिवार्य - दो और दो मिलकर चार अवश्य होगा। (अनिवार्यता, आकस्मिकता)

बुद्धि प्रत्यक्षों को इन बारह साँचों में ढालती है। सारे के सारे सम्बन्ध इन्हीं बारह में आ जाते हैं। इन सम्बन्धों से बुद्धि के बारह संप्रत्यय निकलते हैं।
सम्पूर्णता, सत्ता, द्रव्य-गुणभाव, संभावना-असम्भावना
अनेकता, अभाव, कार्य कारणभाव, वास्तविकता अवास्तविकता
एकता, सीमितभाव, अन्योन्याभाव, अवश्यंभाविता
आकस्मिकता

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes GRB BOOKS

बुद्धि के ये ही बारह संप्रत्यय संवेदनाओं में सम्बन्ध स्थापित करते हैं और तभी ज्ञान होता है। पर इन संप्रत्ययों का अस्तित्व वस्तुओं में नहीं है। ये शुद्ध बुद्धि के प्रागनुभविक आकार हैं, साँचे हैं। जिसपर किसी रंग रूप के पाषु कर्पूरी में छाप डालने के लिए काठ के साँचे रहते हैं, उसीप्रकार ये बुद्धि के अन्तर्गत हैं और इन्हीं की छाप संवेदनाओं पर पड़ती है, जिससे प्रत्यक्ष बोध सम्बन्धित होते हैं। इन बारह संप्रत्ययों में सम्बन्धवाचक संप्रत्ययों को कान्ट ने सबसे प्रमुख माना है। इन चार प्रकार के सम्बन्धों से यह पता चलता है कि सभी द्रव्य पदार्थों में परिमाण, गुण, सम्बन्ध और प्रकार है क्योंकि इन्हीं संप्रत्ययों के द्वारा ज्ञान होता है। इसलिए शून्य, निर्गुण, अकारण आदि बोध सम्भव नहीं। इन बारह संप्रत्ययों में छः को जो गुण और परिमाण पर आधारित हैं, कान्ट ने गाणितिक कहा है और बाकी छः को गत्यात्मक।

2. मूल संप्रत्ययों की अनुभवातीत व्याख्या (Transcendental deduction of categories) —

ज्ञान किसी एक क्षण के या कुछ क्षणों के असंगृहीत (संवेदनों या सम्बन्धों) अनुभवों को नहीं कहा जा सकता, अपितु भिन्न अनुभवों के नियमानुकूल संग्रह को तो यह संग्रह कैसे सम्भव है? कान्ट ने उत्तर दिया है कि अहंभाव के द्वारा ही यह एकत्रीकरण सम्भव होता है। अनुभव भिन्न प्रकार के होते हैं, पर प्रत्येक के साथ 'अहंभाव' (अर्थात मैं अनुभव कर रहा हूँ का

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS Notes

भाव रहता है।

हमारे प्रत्यक्ष तथा स्मृतियाँ मे के द्वारा सम्भव है। इसी कारण अवबोधों में संश्लेषणात्मक एकता कहता है। इस प्रकार अनुभव की सत्ता के लिए अहं प्रत्यय अर्थात मैं का ज्ञान आवश्यक है। इसी में मेरे द्वारा अनुभव हमारे अपने हैं और दूसरे के दूसरे तथा एक अनुभव का दूसरे अनुभव से सम्बन्ध तथा उनकी कल्पना और स्मृति रहती है। पर मैं क्या है, कैसा है, यह नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वह ज्ञान का विषय नहीं हो सकता। उसके विषय में चिन्तन करने पर भी उस क्षण उस चिन्तन में भी वही भाव रहेगा।

संवेदनाएँ पृथक-पृथक हमारे मस्तिष्क में आती है। यदि एक संवेदना या प्रत्यक्ष एक क्षण में हो और दूसरे क्षण वह लुप्त हो जाय तो न किसी वस्तु का प्रत्यक्ष हो सकता है और न कोई निर्णय रचे जा सकते हैं। इसलिए ज्ञान की पहली शर्त है संवेदन-राशि को अपने अवधान में एक साथ रखना। यह शर्त अनुभव से प्राप्त नहीं की जाती। यह प्रागनुभविक है। यह देश-काल के शुद्ध संवेदनों में भी लागू है। यह सहज प्रत्यक्ष में संवेदनाओं का संयोजन है।

यदि कलम के एक भाग का एक क्षण में प्रत्यक्ष हुआ और दूसरे क्षण में दूसरे भाग का तो पूर्ण कलम के प्रत्यक्ष बोध के लिए

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes!

GRB BOOKS

पहली संवेदनाओं को अपनी कल्पना में सही-सही स्मरण करना आवश्यक है। यदि दूसरे भाग के प्रत्यक्ष के पहले, पहले भाग की स्मृति लुप्त हो जाय तो पूरी कलम का प्रत्यक्ष नहीं हो सकता है। अतः ज्ञान की यह दूसरी शर्त है। जो प्रागनुभविक है, संयोजित संवेदनाओं की कल्पना में पुनः स्मृति।

ज्ञान की तीसरी शर्त यह है कि जिन प्रत्यक्षों की पुनः स्मृति होती है, उनको हम पहचान लें। यदि उस प्रत्यक्ष को हम पहचाने नहीं तो दोनों प्रत्यक्षों का एक साथ विचार नहीं हो सकता और उस कलम का बोध नहीं होगा। अतः ज्ञान के लिए संप्रत्ययों में प्रत्यभिज्ञान का संयोजन आवश्यक है।

नियम का विश्लेषण मूल संप्रत्ययों के कार्य-नियमों का विश्लेषण: इस खंड में कान्ट ने इस बात की व्याख्या की है कि कैसे अर्थात् किन नियमों के आधार पर संप्रत्यय प्रत्यक्षों (संवेदनों) पर काम करते हैं। प्रत्यक्ष बोध संवेदन-शक्ति से प्राप्त होते हैं, संप्रत्यय बुद्धि के सांचे हैं। उन्हीं के द्वारा प्रत्यक्ष-बोधों में सम्बन्ध स्थापित कर निर्णय बनते हैं। पर प्रश्न यहाँ यह है कि प्रत्यक्ष-बोध तथा संप्रत्ययों के स्वरूप भिन्न हैं तो उनमें सम्बन्ध कैसे होता है? दो पदार्थों में सम्बन्ध तो तभी सम्भव है जब उनमें कुछ बातें सामान्य हों पर यहाँ ऐसी बात नहीं है इसलिए कान्ट

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

ने तर्क बुद्धि में एक ऐसे तत्व की कल्पना की है जिनमें दोनों प्रत्यक्ष बोध तथा संप्रत्यय के स्वरूप का अंश वर्तमान है वह है काल प्रत्यय। काल प्रत्यय के द्वारा प्रत्यक्ष बोध तथा संप्रत्ययों में सम्बन्ध होता है। काल प्रत्यय के स्वरूप और अन्वय योजना की व्याख्या कांट ने नियमों के विश्लेषण खण्ड में की है।

तर्क बुद्धि की अन्वय योजना — अब यह प्रश्न होता है कि तर्क बुद्धि के संप्रत्यय बाह्य संवेदनाओं पर कैसे काम करते हैं? संवेदन बाह्य है और संप्रत्यय आत्मगत। संवेदनों की प्राप्ति में मन निष्क्रिय रहता है। संप्रत्यय में सक्रिय तो कैसे संवेदन बाहर से आकर इन संप्रत्ययों से सम्बन्धित हो जाते हैं? दोनों में क्या समानता है?

काण्ट ने बतलाया है कि यह सम्बन्ध काल-प्रत्यय के द्वारा होता है। काल प्रत्यय बाह्य और आंतरिक दोनों है। संप्रत्ययों के प्रकार प्रागनुभविक और संवेदनाओं के प्रकार बाह्यरूप भी इसका है। इसलिए काल के माध्यम द्वारा यह संभव होता है। इसलिए काल को काण्ट ने व्यवस्थापक और इस क्रिया को तर्क बुद्धि की अन्वय योजना कहा है। काण्ट ने बारह संप्रत्ययों का उल्लेख किया है जो परिमाण गुण सम्बन्ध तथा विधि पर आधारित है। अतः काल भी इन चार रूपों में संप्रत्ययों को संवेदनागम्य करता है। क्षणों की श्रृंखला के रूप में काल परिमाण-प्रत्यय का रूप है; पूर्णता

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

काल का प्रत्येक क्षण, अनेकता काल का अनेक क्षण और एकता काल का एक क्षण है। काल की वास्तविकता ही गुण-प्रत्यय है। सत्ता, काल में घटनों का अभाव, काल में घटना के अभाव को कहते हैं। सम्बन्ध-प्रत्यय तथा प्रकार भी काल ही के रूप हैं। काल में अस्तित्व या स्थिरता को द्रव्य-गुण भाव, क्रम को कार्य-कारण भाव और परस्परता को अन्योन्यभाव कहते हैं। किसी विशिष्ट काल में स्थिति को वास्तविकता और नित्यता को अवश्यम्भाविता और अनित्यता को सम्भावना कहते हैं।

तर्क-बुद्धि के नियमों की व्याख्या - संप्रत्यय के चार विभागों के आधार पर नियमों के चार विभाग आश्रित हैं। अतः जिन नियमों से संप्रत्ययों से प्रत्यक्षों का ग्रहण तथा सम्बन्ध करते हैं, वे चार हैं —

(1) Axioms of intuition (प्रत्यक्ष बोध की स्वयं सिद्धियाँ) सभी वस्तुएं जो प्रत्यक्ष के द्वारा बुद्धि को प्राप्त होती हैं, उनका परिमाण होता है।

(2) Anticipation of perception (प्रत्यक्षों की आशंसा) सभी अनुभवाश्रित वस्तुओं में गुण होता है।

(3) Analogy of Experience — (अनुभव का साम्यानुमान) इनमें तीन सिद्धान्त हैं।

(क) द्रव्य का बोध (ख) कारणता का बोध और (ग) वस्तुओं का पारस्परिक निश्चयीकरण।

(IV) Postulates of Empirical

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

thought (अनुभवाश्रित विचारों की आवश्यक मान्यताएँ) में विरोध नहीं होता। आवश्यकमान्यताओं — वास्तविक वह है जिसका यथार्थ से मेल है। सम्भव वह है जिसमें विरोध नहीं हो। अनिवार्य वह है, जो कारण से निकलता है।

संक्षेप में

(1) बाह्य संवेदन ज्ञान के द्रव्य के रूप में बुद्धि को मिलते हैं।

(2) संवेदन — शक्ति, देश-काल-रूपी चक्षु के द्वारा उन्हें ग्रहण करती है इससे प्रत्यक्ष होता है।

(3) बुद्धि अपनी धारणाओं द्वारा इन प्रत्ययों में सम्बन्ध स्थापित करती है।

(4) बुद्धि काल-भावना द्वारा बाह्य संवेदनों पर काम करती है।

(5) अहं-भावना द्वारा अनुभूतियाँ एकत्र तथा सुव्यवस्थित होती हैं। इसी प्रकार निश्चित, सार्वभौम ज्ञान सम्भव होता है।

विचार-क्रान्ति — इस विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अन्दर से बाहर की व्यवस्था होती है। संवेदनाओं को ज्ञान का रूप देना बुद्धि का ही काम है तथा इसके द्वारा ही वस्तुएँ सम्बन्धित दीखती हैं। अनुभववादियों का मत बिल्कुल इसके विपरीत है। उनके अनुसार बाहर से भीतर की व्यवस्था होती है। ज्ञान केवल अनुभव द्वारा होता है। कान्ट

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes

GRB BOOKS

ने इसे नहीं माना है। इसके अनुसार बुद्धि प्रकृति को बनाती है। कान्ट ने दर्शन में एक क्रान्ति उपस्थित कर दी। कोपर्निकस के द्वारा भूगोल में उपस्थित की हुई क्रान्ति की तरह यह क्रान्ति है। कापर्निकस ने सूर्य को ग्रहों की परिक्रमा का केन्द्र माना था। पहले पृथ्वी को केन्द्र माना जाता था। ठीक इसी तरह कान्ट ने बुद्धि को ज्ञान का केन्द्र माना है। अनुभववादियों को बुद्धि ज्ञान का केन्द्र माना है। अनुभववादियों ने अनुभव को यह स्थान दिया था। पर कान्ट ने बुद्धिवादियों की तरह अनुभव को महत्वहीन नहीं बतलाया है।

गम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS